CHETANA
International Journal of Education
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))

Impact Factor
SJIF 2022 = 6.261

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

आलेख

Received on 10.07.2022
Reviewed on 16.07 2022
Accepted on 18.07.2022

सोशल मीडिया का साहित्यउभरते मुद्दे :,चुनौतियां एवं समाधान

* *देवेंद्र कुमार चौबे*

मुख्य शब्द:	*सोशल मीडिया, साहित्य, समाज, सूचना एवं संचार तकनीकी आदि.*

संक्षेप

सूचना एवं संचार तकनीकी के विकास ने मानव जीवन के लगभग सभी आयामों को गहनता से प्रभावित किया है। इंटरनेट एवं मोबाइल टेक्नोलॉजी जैसे संचार के नए उपकरणों ने वैश्विक स्तर पर लोगों की दूरियों को न सिर्फ कम किया, बल्कि एक वैश्विक समुदाय को निर्मित किया है। साहित्य, जो 'समाज का दर्पण' कहलाता है, मानव समाज के इन नवीन बदलावों से अछूता नहीं है। फेसबुक, ट्विटर, इन्स्टाग्राम, व्हाट'स एप्प आदि सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों ने साहित्य को एक नया आयाम दिया है। इसने एक तरफ परंपरागत साहित्य व समकालीन साहित्य की मान्यताओं एवं उसके सिद्धांतों को चुनौती दी है, तो दूसरी तरफ यह साहित्य के लिए अत्यंत प्रभावशाली उपकरण के स्थापित हो रहा है। आज ये माध्यम साहित्य के संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। साहित्य के विषय में ऐसी मान्यता है कि इसका मुख्य उद्देश्य मानव एवं मानव समाज के विविध पहलुओं का सहज चित्रण कर लोगों तक पहुँचाना है। ऐसे में सोशल मिडिया का साहित्य इस उद्देश्य को पूरा करने में कितना सक्षम है ,यह विषय समकालीन साहित्यकारों में विमर्श का विषय बना हुआ है। २१वीं सदी के इस डिजिटल समाज में सोशल मिडिया का साहित्य अपना अस्तित्व स्थापित कर चुका है। यह आलेख सोशल मीडिया के साहित्य का परंपरागत साहित्य में स्थान, इसके द्वारा उठाए जानेवाले समकालीन समाज के प्रमुख मुद्दों एवं चुनौतियों पर रोशनी तो नहीं डालता है, भविष्य में इसकी संभावनाओं पर एक समालोचनात्मक दृष्टि अवश्य प्रस्तुत करता है। आलेख सोशल मीडिया के साहित्य से जुडी चिंताओं का समाधान खोजने का प्रयत्न अवश्य करता है।

परिचय

सूचना एवं संचार तकनीकी के कारण साहित्य में लेखन, वाचन, श्रवण, किसी रचना का सृजन, साहित्यिक कला का प्रदर्शन आदि के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव आया है । हम यह कह सकते हैं कि साहित्य की संरचनात्मक एवं प्रकार्यात्मक पहलु में व्यापक बदलाव आया है । वर्चुवल एवं आभासी मंच की दुनिया में 'इंटरनेट एवं मोबाइल टेक्नोलॉजी पर आधारित फेसबुक, ट्विटर, इन्स्टाग्राम, व्हाट'स एप्प आदि सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर साहित्यिक गतिविधियां 'सोशल मिडिया का साहित्य' कहलाती हैं। बदलते समय के साथ लेखन ने विकास की जो यात्रा तय की है वह भोजपत्रों, ताम्रपत्रों से होते हुए कागज़ तक और अब उससे भी आगे डिजिटल लेखन तक पहुँच गया है। वर्तमान समय में मार्शल मैक्लूहान का 'मीडियम इज मैसेज' यानी माध्यम ही संदेश है की बात हावी हो रही है। वर्चुअल दुनिया की ताकत ज़ोर पकड़ रही है, और हर कोई इस ताकत के साथ जोर आजमाइश कर लेना चाहता है। और चाहे भी क्यों नहीं; यह जो 'वर्चुअल स्पेस' है तकनीक का लोकतंत्रीकरण है। किसी को मनाही नहीं है अपनी बात कहने को, अपने विचार साझा करने को और न ही उसे अनुभूतियां प्रकट करने की मनाही है। [1] क्या सोशल मीडिया साहित्य को समृद्ध कर रहा है या फिर पतन की ओर ले जा रहा है? क्या ये साहित्य के प्रचारप्रसार में किसी तरह की भूमिका निभा रहा है-? इन बातों पर सोशल मीडिया पर सक्रिय युवा और अनुभवी साहित्यकारों के विचारों में भी भिन्नता है। किंतु एक बात पर सभी सहमत हैं कि सोशल मीडिया ने गंभीर साहित्य भले ही पैदा न किया हो, लेकिन साहित्य के प्रचार में अपनी भूमिका जरूर निभा रहा है।यद्यपि मैं इससे सहमत नहीं हूं कि सोशल मीडिया में गंभीर साहित्य नहीं रचा जा रहा।[2]

क्या है सोशल मिडिया?

सोशल मीडिया शब्द एक कंप्यूटरआधारित तकनीक को संदर्भित करता है जो आभासी नेटवर्क और समुदायों के माध्यम - से विचारों, विचारों और सूचनाओं को साझा करने की सुविधा प्रदान करता है।[3] सोशल मीडिया इंटरनेट आधारित है और उपयोगकर्ताओं को व्यक्तिगत जानकारी, दस्तावेज़, वीडियो और फ़ोटो जैसी सामग्री का त्वरित इलेक्ट्रॉनिक संचार प्रदान करता है। उपयोगकर्ता वेबआधारित सॉफ़्टवेयर या एप्लिकेशन के माध्यम से कंप्यूटर-, टैबलेट या स्मार्टफोन के माध्यम से सोशल मीडिया से जुड़ते हैं। फेसबुक, ट्विटर, इन्स्टाग्राम, व्हाट'स एप्प, ब्लॉग आदि सोशल मीडिया के उदाहरण हैं । सोशल मीडिया के विकास और विस्तार ने लोगों की बातचीत और उसके संचरण में तेजी से बदलाव किया है, जिससे अभूतपूर्व पैमाने पर सहृदयों का ध्यान आकर्षित हुआ है।[4] सोशल मिडिया आज के समय में कितना ताकतवर है,इसका अंदाजा हम इससे जुड़े कुछ चौकाने वाले तथ्यों से कर सकते हैं । दुनिया की 59 फीसदी आबादी सोशल मीडिया का इस्तेमाल करती है। औसत दैनिक उपयोग 2 घंटे 29 मिनट जुलाई)2022) है।[5] 2022 में, फेसबुक उपयोगकर्ताओं की संख्या के मामले में भारत पहले स्थान पर है, यहाँ फेसबुक उपयोगकर्ताओं की संख्या 329.65 मिलियन है । संयुक्त राज्य अमेरिका दूसरे स्थान पर है जहाँ 179.65 मिलियन फेसबुक उपयोगकर्ता हैं।[6] इसी प्रकार एक अन्य रिपोर्ट के मुताबिक व्हाट्सएप दुनिया भर में सबसे लोकप्रिय वैश्विक मोबाइल मैसेंजर ऐप है, जिसमें लगभग दो बिलियन मासिक सक्रिय उपयोगकर्ता हैं । वीचैट के 1.2 एवं फेसबुक मैसेंजर के 988 मिलियन वैश्विक उपयोगकर्ता के साथ क्रमशः दुसरे एवं

तीसरे नंबर पर हैं । जहां तक भारत की बात है तो 47% (46 करोड़ से ज्यादा नागरिक सोशल मीडिया का प्रयोग लिखने (पढ़ने क-े लिए करते हैं । भारत में सोशल मीडिया के यूजर्स भी 4.2% बढ़े हैं। देश में सोशल मीडिया को यूज़ करने औसत समय भी 4 से 6 घंटे तक बढ़ गया है । सन 1997 अर्थात आज से तक़रीबन 25 वर्ष पहले अमेरिका के न्यूयार्क में 'सिक्स डिग्रीज' नाम से दुनिया का पहला सोशल मिडिया अस्तित्व में आया और आज यह मानव जीवन में अनिवार्य संचार माध्यम के रूप में स्थापित हो चुका है-।

क्या 'सोशल मीडिया का साहित्य', साहित्य है?

साहित्यकारों में इस संदर्भ में दो मत हैं – सोशल मिडिया का साहित्य, साहित्य नहीं है, क्योंकि यह साहित्य के मानक कसौटी पर खरा नहीं उतरता । इससे साहित्य में न रचनाशीलता का कोई विकास हुआ है और ना ही पाठकीयता का[7] सोशल मीडिया ने एक ओर जहां अभिव्यकित की स्वतंत्रता को मजबूती दी है, वहीं दूसरी ओर अराजकता को भी प्रश्रय दिया है। सोशल मीडिया ने साहित्य को तुरंता बना दिया है। तुरंत लिखो, तुरंत छापो और तुरंत छा जाओ। कहने की आवश्यकता नहीं कि साहित्य के संदर्भ में सोशल मिडिया ने अधैर्य का अंतहीन सिलसिला शुरू किया है।[8] दूसरा मत यह है कि सोशल मिडिया का साहित्य एक आधुनिक साहित्य है । प्रश्न हैं; साहित्य की गुणवत्ता में गिरावट के लिए हम सोशल मीडिया को दोष क्यों देते हैं? हम अपने आप को एक ऐसे स्थान पर क्यों पाते हैं जहाँ हम साहित्य के सुधार के मानकों को बेहतर बनाने के तरीकों की खोज करते हैं? हम अपने आप से यह सवाल क्यों नहीं कर सकते कि हमें साहित्य के सौंदर्यशास्त्र को देखने के तरीकों पर पुनर्विचार करना चाहिए । क्या आपको नहीं लगता कि सोशल मीडिया और साहित्य को विपरीत दिशा में रखना साहित्य को गलत समझना है? क्या साहित्य ही मीडिया नहीं है? क्या साहित्य सोशल मीडिया की तरह संचार का साधन नहीं है? साहित्य की गुणवत्ता कौन तय करता है? क्या लोकतंत्रीकरण ने खराब साहित्य को मान्यता दी है? ध्यान स्पैमिंग के लिए सोशल मीडिया को दोष देना कितना उचित है? क्या सोशल मीडिया के विकास ने साहित्य का उपभोग करने वाले लोगों को प्रभावित किया है? क्या महारानी एलिजाबेथ के समय में मौजूद साहित्य से चिपके रहना और उस आलोक में आज के साहित्य की आलोचना करना उचित है? [9] साहित्य और सोशल मीडिया का रिश्ता चाहे मुख्यधारा से जुड नहीं पाया, किंतु साहित्य की पहुंच उन लोगों तक जरूर हुई है जो लिखनेपढ़ने - मीडिया ने एक अहम भूमिका तो निभाई ह साहित्य के विकास में सोशल :से दूर रहते थे। अत◌ी है।[10] कहने का अर्थ यह है कि सोशल मिडिया के साहित्य के समक्ष दो महत्वपूर्ण प्रश्न हैं पहला – सोशल मिडिया के साहित्य का साहित्य पर सकारात्मक प्रभाव एवं, दूसरा – सोशल मिडिया के साहित्य का साहित्य पर नकारात्मक प्रभाव । दोनों प्रश्न विचारणीय एवं अर्थपूर्ण हैं किंतु वर्तमान युग में समाज जहाँ डिजिटल हो गया है एवं मोबाइल तथा इंटरनेट संचार का सबसे सशक्त माध्यम बन गया है, सोशल मीडिया के साहित्य की प्रसंगिकता से हम इंकार नहीं कर सकते है । आवश्यकता इससे जुड़ी चुनौतियों की पहचान कर साहित्य को नयी दिशा देने की है I

सोशल मिडिया का साहित्य–क्या है मुख्य चुनौतियां?

सोशल मिडिया के साहित्य के साथ तीन प्रमुख चुनौतियां हैं, पहली– कैसे इस साहित्य की उद्धेश्यपरकता, विश्वसनीयता एवं वैधता को सुनिश्चित किया जाय । दूसरी–सूचना के बढ़ते संसार में ज्ञान के आत्मसात करने की मानवीय क्षमता के परिप्रेक्ष्य में सोशल मीडिया के साहित्य को निर्देशित करना एवं, तीसरी–स्वयं सोशल मीडिया की सीमाएं । निस्संदेह सोशल मीडिया का साहित्य आधुनिक साहित्य है और यह साहित्य के प्रचार, प्रसार एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। किंतु, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि इस साहित्य की गुणवत्ता, विश्वसनीयता एवं वैधता को लोग संदेह की दृष्टि से देखते हैं। इसलिए कैसे सोशल मिडिया के साहित्य की गुणवत्ता, उद्धेश्यपरकता, विश्वसनीयता एवं वैधता को सुनिश्चित किया जाय, यह एक बड़ी चुनौती है । इसी प्रकार सूचना एवं संचार क्रांति ने सूचना के संसार को वृहत बना दिया है। मानव-क्षमता के साथ यह एक समस्या है कि कैसे इन सूचनाओं को ज्ञान के रूप में आत्मसात करें। सावधानी यह भी रखनी पड़ेगी की क्या आत्मसात करने योग्य है और क्या विसर्जित करने योग्य I ऐसे में सोशल मिडिया के साहित्य को इस परिप्रेक्ष्य में निर्देशित करना एक चुनौती वाला कार्य है । वहीं सोशल मीडिया की अपनी सीमाएं हैं, इन सीमाओं की समझ सोशल मीडिया के साहित्यकारों तक पहुँचाना भी एक चुनौती है क्योंकि संवेदनात्मक समाज में संवेदनात्मक सूचनाएं प्रसारित करना समाज की शांति को भंग भी कर सकता है इन माध्यमों की पहुँच को देखते हुए I I यह खतरा और बढ़ जाता है

क्या हो आगे का रास्ता?

साहित्य समाज का दर्पण है, समाज में परिवर्तन साहित्य में परिवर्तन को सृजित करता है । समय के साथ साहित्य का स्वरूप एवं इसकी विधाएं बदलती रही हैं । जैसेवैसे साहित्य भी अपना -जैसे समाज का स्वरुप बदलता जाता है वैसे- Iतेवर और कलेवर बदल लेता हैवर्तमान समाज सोशल मीडिया का समाज है, अतः सोशल मीडिया के साहित्य को साहित्य की अभिनव प्रवृत्ति के रूप में देखा जाना चाहिए । साहित्यकार साहित्य की दिशा को तय नहीं करते बल्कि यह परिवर्तनशील समाज है जिससे ,साहित्य वस्तु ग्रहण करता है । साहित्यकार बदलते समाज के अनुरूप साहित्यिक कौशल को विकसित करतें हैं और समकालीन समाज की छवि को अपने साहित्य की विधाओं में गढ़ते हैं, जिससे उनके विचार आम जन तक कलात्मक रूप में पहुंच सकें। अतः परम्परा बनाम आधुनिकता के द्वंद्व को परस्पर विरोधी मानने के बजाय पूरक मानना ही उचित है। इससे साहित्य को एक नया आयाम मिलेगा, वहीं साहित्य का संसार और भी समृद्ध होगा । आज के साहित्यकारों को चाहिए कि साहित्य के बुनियादी तत्वों को समझें । सोशल मीडिया ने साहित्य के सामाजिक निहितार्थ को आश्चर्यजनक तरीके से बदला है । साहित्य की सामाजिक महत्ता तब खत्म हो जाती है, जब इसका दुरुपयोग लोगों एवं संगठनों के द्वारा अपने हिसाब से किया जाता है। सोशल मीडिया के साहित्य की विश्वसनीयता तब और बढ़ेगी जब इस समूह के परिपक्व साहित्यकारों का एक वर्ग तैयार होगा।

निष्कर्ष

परिवर्तन सृष्टि का अपरिवर्तनीय नियम है। ठहरी हुई चीजें सड़ जाती हैं, प्रवाह हमेशा शुद्धता और गति का प्रतीक रहा है। साहित्य यदि अपने यथार्थवादी रूप में समाज का दर्पण है ,तो दूसरी तरफ अपने आदर्शवादी रूप में समाज का दीपक भी है। हम तो यही चाहेंगे कि आईने के रूप में यह समाज के सत्य को दिखाए और दीए के रूप में यह समाज को गढ़ने में अपने दायित्व का भी निर्वहन करे।

निश्चय ही सोशल मीडिया इस साहित्य के प्रसरण में ही नहीं बल्कि अध्येताओं के रचना कौशल की धार में भी क्रांतिकारी माध्यम बनकर आया है। इसमें कोई शक नहीं है कि स्थापित साहित्यकारों ने भी अपने साहित्य के सहज संचरण के लिए इस माध्यम को उपयोग में लाना शुरू कर दिया है। यह माध्यम नवांकुर रचनाकारों के लिए भी स्वर्णिम पटल बनकर उभर रहा है। भावनाएं जो अब तक हृदय में कैद थीं, सुविधा मिलते ही वे साहित्य के विभिन्न रूपों में ढलने लगी हैं। कहने की आवश्यकता नहीं है कि सामाजिक माध्यमों का भविष्य सुनहरा है। विशेषकर अपनी सुलभता के कारण यह प्रिंट माध्यमों की अपेक्षा तीव्रता से विकसित हो रहा है। प्रिंट माध्यम के सामने यह माध्यम चुनौती के रूप में उभर रहा है। पुस्तकप्रेमियों में डर है कि पुस्तक पढ़ने की -, उन्हें सहेजने की पारंपरिक विधा खतरे में ना पड़ जाए।

अंततः यह कि सामाजिक माध्यमों का यह साहित्य, साहित्य के तमाम प्रारूपों और विधाओं को लोकप्रिय बनाने में अपनी महती भूमिका निभा रहा है। हमारी कामना है कि साहित्य समाज को गढ़ने का अपना कर्तव्य सोशल मीडिया के माध्यम से तीव्रतर गति से कर पाए। एक बार पंडित नेहरु से दिनकर जी ने कहा था कि राजनीति जब –जब लड़खड़ाएगीआज राजनीति और समाज दोनों नव I तब साहित्य उसे संभाल लेगा-तब ,निर्माण की प्रक्रिया में हैं ऐसे में दिनकर जी के परवर्ती रचनाकार होने के नाते साहित्य के सामने गुरुतर चुनौतियां हैं इसलिए बौधिक समाज और रसिक समाज दोनों ही सोशल मिडिया के साहित्य को आशा भरी दृष्टि से देख रहें हैं I

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *त्रिपाठी, अम्ब्रीश(2020). हिंदी का नया वितान: सोशल मीडिया,आलेख, भाषा प्रोधोगिकी, https://hinditech.in/journal*
2. *पत्रिका न्यूज़(अक्टूबर 2017).सोशल मीडिया साहित्य के प्रसार में अच्छी भूमिका निभा रहा है, https://www.patrika.com/special-news/social-media-is-playing-a-good-role-in-the-dissemination-of-literature-1-1879087/*
3. *ज्योति सूरज हरचेकर (जुलाई, 2017). समाज पर सोशल मीडिया का प्रभाव, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (आईजेईआरटी) खंड 06, अंक 07. http://dx.doi.org/10.17577/IJERTV6IS070249*
4. *इओंग, ची(2020). सामाजिक मीडिया एक साहित्य समीक्षा, Journal of Media Research. 13. 112-126. 10.24193/jmr.38.7.*

5. *शैफ़ी, डेव (2022). वैश्विक सोशल मीडिया सांख्यिकी अनुसंधान सारांश https://www.smartinsights.com/author/davechaffey.*
6. *सबसे ज्यादा फेसबुक यूजर्स वाले देश (2022) https://www.statista.com/statistics/268136/top-15-countries-based-on-number-of-facebook-users/*
7. उपाध्याय, हरे प्रकाश *(अक्टूबर 2017).सोशल मीडिया साहित्य के प्रसार में अच्छी भूमिका निभा रहा है, पत्रिका न्यूज , https://www.patrika.com/special-news/social-media-is-playing-a-good-role-in-the-dissemination-of-literature-1-1879087/*
8. श्रीवास्तव, जितेन्द्र*(अक्टूबर 2017).सोशल मीडिया साहित्य के प्रसार में अच्छी भूमिका निभा रहा है, पत्रिका न्यूज ,* https://www.patrika.com/special-news/social-media-is-playing-a-good-role-in-the-dissemination-of-literature-1-1879087/
9. *बशीर, मीर आदिल(मार्च 2019).* इज सोशल मिडिया द मॉडर्न लिटरेचर, *https://www.thelegitimatenews.com/is-social-media-the-modern-literature/*
10. त्रिपाठी, विमलेश*(अक्टूबर 2017).सोशल मीडिया साहित्य के प्रसार में अच्छी भूमिका निभा रहा है, पत्रिका न्यूज ,* https://www.patrika.com/special-news/social-media-is-playing-a-good-role-in-the-dissemination-of-literature-1-1879087/

Corresponding Author
*** देवेंद्र कुमार चौबे**
सहायक प्राध्यापक, हिंदी-विभाग
पीमेमोरियल कॉलेज.रॉय.के.,धनबाद
Email-choubeydkdhanbad1975@gmail.com, Mob.-9955722196